7 महाकवि भूषण

कविवर भूषण का जन्म कानपुर जिले के तिकवाँपुर ग्राम में सन् 1613 ई० में हुआ था। इनके पिता पण्डित रत्नाकर त्रिपाठी दुर्गाजी के अनन्य भक्त थे। हिन्दी के प्रसिद्ध रससिद्ध कवि चिन्तामणि और मतिरामजी उन्हीं के पुत्र थे। भूषण इनकी कवि उपाधि थी जो इन्हें चित्रकूट के सोलंकी महाराजा रुद्र से प्राप्त हुई थी। इनका वास्तविक नाम 'पतिराम' कहा जाता है। इनके जीवन का प्रारम्भिक चरण अकर्मण्यता से ग्रसित था। प्रसिद्ध है कि भाभी के कटु व्यंग्य से मर्माहत होकर इन्होंने घर छोड़ दिया। बाद में जब घर वापस आये तो इनमें पाण्डित्य एवं कवित्व शक्ति थी। ये आश्रय की खोज में बहुत घूमे, पर यह प्रसन्न हुए शिवाजी तथा छत्रसाल के दरबारों में। इनकी जीवन-लीला का अवसान सन् 1715 ई० के लगभग माना जाता है।

कवि-परिचय : एक नजर में

- **जन्म**—सन् 1613 ई०।
- **जन्म-स्थान**—तिकवाँपुर (कानपुर)।
- **पिता**—रत्नाकर त्रिपाठी।
- **प्रमुख रचनाएँ**—शिवराज भूषण, शिवा बावनी, छत्रसाल दशक।
- **प्रधान रस**—वीर।
- **भाषा**—ब्रजभाषा।
- **शैली**—ओजपूर्ण वर्णनात्मक शैली।
- **मृत्यु**—सन् 1715 ई०।
- **साहित्य में स्थान**—इन्हें रीतिकाल के कवियों में एक विशेष स्थान प्राप्त था तथा इन्होंने राष्ट्रीयता की भावना को जाग्रत किया।

विलासिता और परतन्त्रता के युग में स्वतन्त्रता, ओजस्विता, तेजस्विता एवं राष्ट्रीयता का स्वर हम भूषण के मुख से ही सर्वप्रथम सुनते हैं। भूषण ने अपने समकालीन कवियों की तरह विलासी, आश्रयदाताओं के मनोरंजन के लिए शृंगारी काव्य की रचना न कर अपनी वीरोपासक मनोवृत्ति के अनुकूल अन्याय और संघर्ष के दमन में तत्पर, ऐतिहासिक महापुरुष शिवाजी एवं छत्रसाल जैसे वीरनायकों का अपनी ओजस्वी कविता द्वारा लोमहर्षक गुणगान किया। यद्यपि ये अपने युग की लक्षण-ग्रन्थ-परम्परा से तथा युग की प्रवृत्तियों से सर्वथा मुक्त नहीं थे, तथापि जातीय, राष्ट्रीय भावनाओं की सशक्त अभिव्यक्ति इनके काव्य की सबसे बड़ी विशेषता रही है। भारतमाता के अमर पुत्र छत्रपति शिवाजी एवं महाराजा छत्रसाल बुंदेला जैसे लोकोपकारी महापुरुषों के चरितगायन में ही इन्होंने अपने जीवन को सार्थक समझा। इन्हीं महापुरुषों की दानशीलता, युद्धवीरता, दयालुता एवं धर्मपरायणता का महाकवि भूषण द्वारा उदात्त चित्रण किया गया है। इन्हीं चरितनायकों के शौर्य-वर्णन या वीर रसात्मक उद्गार सारी भारतीय जनता की सम्पत्ति है। इन्होंने स्वयं कहा है—'**सिवा को सराहौं कै सराहौं छत्रसाल को।**'

भूषण की कविता में प्रधानतया वीर रस का ही परिपाक हुआ है। वीर रस के सहकारी रौद्र और भयानक हैं। अपने प्रिय रस के निरूपण में भूषण ने त्रास या भय के अनेक रूपों की व्यंजना अनेक प्रकार की रसात्मक स्थितियों की कल्पना के साथ की है। इनमें नवीन उद्‌भावना की क्षमता अच्छी थी। विपक्ष की दीनता, व्याकुलता और खीझ आदि की सहायता से शिवाजी के आतंक की व्यंजना में नूतनोद्‌भावना के अनेक प्रयोग भूषण की रचना में हैं। वीभत्स की व्यंजना में पारम्परिक वर्णन है। युगीन प्रवृत्तियों के अनुरूप भूषण ने श्रृंगार रस का भी वर्णन किया है, पर इसमें भी इन्होंने नवीन उद्‌भावनाएँ की हैं।

भूषण की रचना दृश्य-चित्रण में भी श्रेष्ठ है, यद्यपि इसके लिए मुक्तक में स्थान कम ही होता है। वीर रस की कृति में युद्धस्थल का चित्रण आ सकता है, पर युद्धस्थल में अनेक दृश्यों के त्वरित गति से संघटित होने के कारण चित्रण की विशेष विधि ही काम में आ सकती है। अनेक दृश्यों का सुगुंफित चित्रण मुक्तक में प्रायः नहीं आ पाता। फिर भी भूषण ने '**ताव दै-दै मूँछन कंगूरन पै पाँव दै-दै, घाव दै-दै अरिमुख कूदि परैं कोट में**' जैसे चित्रणों में सफलता प्राप्त की है। युद्धस्थल-वर्णन की अपेक्षा युद्धस्थल प्रस्थान-वर्णन ही भूषण की रचना में अधिक है।

भूषण विरचित तीन ग्रन्थ उपलब्ध हैं—**शिवराज भूषण, शिवा बावनी** और **छत्रसाल दशक**। भूषण को हिन्दी साहित्य का प्रथम राष्ट्रीय कवि माना जाता है, परन्तु भूषण की राष्ट्रीयता की परीक्षा देश की तत्कालीन परिस्थितियों को ध्यान में रखकर ही करनी चाहिए। यह बहुत ही भ्रान्त धारणा है कि ये मुसलिम सम्प्रदाय के विरोधी थे। इन्होंने केवल औरंगजेब के साम्राज्यवाद और उसके अमानवीय कृत्यों के प्रति अपना आक्रोश व्यक्त किया है। उदार हृदय मुसलमान तो इनकी प्रशंसा के विषय थे—

''दौलत दिल्ली की पाय कहाये आलमगीर।
बब्बर अकब्बार के बिरद बिसारे तैं।''

यद्यपि भूषण की कविता ब्रजभाषा में है परन्तु इसमें ब्रजभाषा के माधुर्य की नहीं, ओज की प्रधानता है। इनकी भाषा में स्थानीय पुट भी अनायास आ गया है। इन्होंने अरबी-फारसी के शब्दों का भी निःसंकोच प्रयोग किया है। भूषण अलंकारों के भी मर्मज्ञ थे। 'शिवराज भूषण' एक अलंकार ग्रन्थ है। अलंकारों के लक्षण दोहों में दिये गये हैं। एक छन्द में कई-कई अलंकारों का प्रयोग किया गया है। स्थान-स्थान पर लोकोक्तियों और मुहावरों के प्रयोग से भाषा सजीव एवं सशक्त हो गयी है।

भक्ति और रीतिकाल के वीर काव्यकारों में भूषण का स्थान अद्वितीय है और जब कभी-कभी हिन्दी के पाठकों या विद्वानों में कवि-चर्चा होती है तो वीर रस के कवि के रूप में भूषण का नाम तुरन्त आ पहुँचता है। वास्तव में भूषण की वीर रस की कविता अन्य कवियों से बढ़-चढ़ कर है, जिसमें वीर रस का परिपाक बड़े सुन्दर ढंग से हुआ है, जिससे वीर भाव की विविध श्रेणियाँ बल, ओज और आतंक के साथ खड़ी दिखायी देती हैं, जिसमें भाषा वीर भावों के पीछे-पीछे चलती हुई दर्शकों को आकृष्ट करती है।

●●●

शिवा-शौर्य

[भूषण ने हिन्दी के श्रृंगार और रीति-काव्य के काल में शिवाजी जैसे वीर पुरुष का यश-गान करके जनता के साहस और प्रसुप्त वीर भावनाओं को जागृत किया था। जो कार्य शिवाजी ने अपनी तलवार से किया, वह कार्य भूषण ने अपनी लेखनी से किया। निम्न छन्दों में महाराज शिवाजी की सेना का युद्ध हेतु प्रस्थान करने का वर्णन है।]

साजि चतुरंग सैन अंग मैं उमंग धारि,
सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है।
भूषन भनत नाद बिहद नगारन के,
नदी नद मद गैबरन के रलत है।
ऐलफैल खैलभैल खलक में गैलगैल,
गजन की ठैलपैल सैल उसलत है।
तारा सो तरनि धूरिधारा में लगत जिमि,
थारा पर पारा पारावार यों हलत है।।1।।

बाने फहराने घहराने घंटा गजन के,
नाहीं ठहराने रावराने देसदेस के।
नग भहराने ग्राम नगर पराने सुनि,
बाजत निसाने सिवराजजू नरेस के।
हाथिन के हौदा उकसाने कुंभ कुंजर के,
भौन को भजाने अलि छूटे लट केस के।
दल के दरारन ते कमठ करारे फूटे,
केरा के से पात बिहराने फन सेस के।।2।।

छूटत कमान बान बंदूकरू कोकबान,
मुसकिल होत मुरचानहूँ की ओट में।
ताही समैं सिवराज हुकुम कै हल्ला कियो,
दावा बाँधि द्वेषिन पै बीरन लै जोट में।
भूषन भनत तेरी हिम्मति कहाँ लौं कहौ,
किम्मति इहाँ लगि है जाकी भट झोट में।

ताव दै दै मूँछन कंगूरन पै पाँव दै दै,
घाव दै दै अरि मुख कूदि परैं कोट में।।3।।
इन्द्र निज हेरत फिरत गजइन्द्र अरु,
इंद्र को अनुज हेरै दुगधनदीस कों।
भूषन भनत सुरसरिता को हंस हेरैं,
बिधि हेरैं हंस को चकोर रजनीस कों।
साहितनै सरजा यौं करनी करी है तैं वै,
होतु हैं अंचभो देव कोटियों तैंतीस कों।
पावत न हेरे तेरे जस में हिराने निज,
गिरि को गिरीस हेरैं गिरिजा गिरीस कों।।4।।

प्रेतिनी पिसाचऽरु निसाचर निसाचरि हूँ,
मिलि मिलि आपुस में गावत बधाई है।
भैरों भूत प्रेत भूरि भूधर भयंकर से,
जुत्थ जुत्थ जोगिनी जमाति जोरि आई है।
किलकि किलकि कै कुतूहल करति काली,
डिम डिम डमरू दिगंबर बजाई है।
सिवा पूछैं सिव सों समाज आजु कहाँ चली,
काहू पै सिवा नरेस भृकुटी चढ़ाई है।।5।

छत्रसाल-प्रशस्ति

[भूषण ने महाराज छत्रसाल की प्रशंसा में 'छत्रसाल दशक' की रचना की थी। निम्न कवित्त उसी का अंश है। कवि ने इन पंक्तियों में युद्धरत छत्रसाल की तलवार और बरछी के पराक्रम का वर्णन किया है।]

निकसत म्यान तें मयूखैं प्रलैभानु कैसी,
फारैं तमतोम से गयंदन के जाल कों।
लागति लपटि कंठ बैरिन के नागिनि सी,
रुद्रहिं रिझावै दै दै मुंडन के माल कों।
लाल छितिपाल छत्रसाल महाबाहु बली,
कहाँ लौं बखान करौं तेरी करवाल कों।
प्रतिभट कटक कटीले केते काटि काटि,
कालिका सी किलकि कलेऊ देति काल कों।।

भुज भुजगेस की वै संगिनी भुजंगिनी-सी,
खेदि खेदि खाती दीह दारुन दलन के।।
बखतर पाखरन बीच धँसि जाति मीन,
पैरि पार जात परवाह ज्यों जलन के।
रैयाराव चंपति के छत्रसाल महाराज,
भूषन सकै करि बखान को बलन के।
पच्छी पर छीने ऐसे परे पर छीने वीर,
तेरी बरछी ने बर छीने हैं खलन के।।

('भूषण ग्रन्थावली' से)

अभ्यास प्रश्न

➥ पद्यांश पर आधारित प्रश्न

1. निम्नलिखित पद्यांशों को पढ़कर उनके नीचे दिये गये प्रश्नों का उत्तर लिखिए—

शिवा-शौर्य

(क) साजि चतुरंग सैन अंग मैं उमंग धारि,
सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है।
भूषन भनत नाद बिहद नगारन के,
नदी नद मद गैबरन के रलत है।
ऐलफैल खैलभैल खलक में गैलगैल,
गजन की ठैलपैल सैल उसलत है।
तारा सो तरनि धूरिधारा में लगत जिमि,
थारा पर पारा पारावार यों हलत है।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं शीर्षक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) प्रस्तुत पद्य में किसके शौर्य एवं पराक्रम का वर्णन किया गया है?
(iv) शिवाजी के युद्ध प्रस्थान के समय पहाड़ों की स्थिति क्या हो जाती है?
(v) शिवाजी के युद्ध प्रस्थान के समय किसका मद और किस प्रकार प्रवाहित हो रहा है?

(ख) बाने फहराने घहराने घंटा गजन के,
नाहीं ठहराने रावराने देसदेस के।
नग भहराने ग्राम नगर पराने सुनि,
बाजत निसाने सिवराजजू नरेस के।

हाथिन के हौदा उकसाने कुंभ कुंजर के,
भौन को भजाने अलि छूटे लट केस के।
दल के दरारन ते कमठ करारे फूटे,
केरा के से पात बिहराने फन सेस के।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं शीर्षक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) शिवाजी के सैन्य प्रस्थान से कछुए और शेषनाग की क्या दशा हुई?
(iv) उड़ते हुए भौंरे किस प्रकार से प्रतीत हो रहे थे?
(v) शिवाजी के युद्ध प्रस्थान के समय पहाड़ों की क्या दशा हुई?

(ग) इन्द्र निज हेरत फिरत गजइन्द्र अरु,
इंद्र को अनुज हेरै दुगधनदीस कों,
भूषन भनत सुरसरिता को हंस हेरैं,
बिधि हेरैं हंस को चकोर रजनीस कों।
साहितनै सरजा यौं करनी करी है तैं वै,
होतु हैं अचंभो देव कोटियों तैंतीस कों।
पावत न हेरे तेरे जस में हिराने निज,
गिरि को गिरीस हेरैं गिरिजा गिरीस कों।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं शीर्षक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) शिवाजी के युद्ध प्रस्थान के समय इन्द्र और भगवान विष्णु क्या कर रहे थे?
(iv) ब्रह्मा और चकोर क्या कर रहे हैं?
(v) उस समय शंकर जी और पार्वती क्या कर रहे हैं?

छत्रसाल-प्रशस्ति

(घ) निकसत म्यान तें मयूखैं प्रलैभानु कैसी,
फारैं तमतोम से गयंदन के जाल कों।
लागति लपटि कंठ बैरिन के नागिनि सी,
रुद्रहिं रिझावै दै दै मुंडन के माल कों।
लाल छितिपाल छत्रसाल महाबाहु बली,
कहाँ लौं बखान करौं तेरी करवाल कों।
प्रतिभट कटक कटीले केते काटि काटि,
कालिका सी किलकि कलेऊ देति काल कों।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं शीर्षक का नाम लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) महाराज छत्रसाल के तलवार की तुलना किससे की गयी है?
(iv) छत्रसाल की तलवार किस-किस के समान शत्रुओं का संहार करती है?
(v) छत्रसाल की तलवार शिवाजी को किस प्रकार प्रसन्न करती है?

(ङ) भुज भुजगेस की वै संगिनी भुजंगिनी-सी,
खेदि खेदि खाती दीह दारुन दलन के।।
बखतर पाखरन बीच धँसि जाति मीन,
पैरि पार जात परवाह ज्यों जलन के।।
रैयाराव चंपति के छत्रसाल महाराज,
भूषन सकै करि बखान को बलन के।।
पच्छी पर छीने ऐसे परे पर छीने वीर,
तेरी बरछी ने बर छीने हैं खलन के।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं शीर्षक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) छत्रसाल को किसका पुत्र बताया गया है?
(iv) छत्रसाल की बरछी ने शत्रुओं की शक्ति को किस प्रकार क्षीण कर दिया है?
(v) प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?

➥ दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित काव्य-सूक्तियों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए—
(क) पच्छी पर छीने ऐसे परे पर छीने वीर।
तेरी बरछी ने बर छीने हैं खलन के।।
(ख) घाव दै दै अरि मुख कूदि परैं कोट में।
(ग) कालिका सी किलकि कलेऊ देति काल कों।
2. "भूषण वीर रस के सफल कवि हैं।" सिद्ध कीजिए।
3. भूषण के काव्य के कलात्मक सौष्ठव की समुचित उदाहरणों के साथ विवेचना कीजिए।
4. भूषण का जीवन-परिचय देते हुए उनकी काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
5. भूषण का जीवन-परिचय देते हुए उनकी कृतियों का उल्लेख कीजिए।
6. सिद्ध कीजिए कि भूषण राष्ट्रीय कवि हैं।
अथवा 'भूषण के काव्य में राष्ट्रीयता का स्वर मुखरित हुआ है।' सोदाहरण सिद्ध कीजिए।
7. भूषण का जीवन-परिचय लिखिए।
अथवा भूषण की शिक्षा-दीक्षा और साहित्यिक योगदान का परिचय दीजिए।
8. "भूषण की कविता की प्रमुख विशेषता उसका ओज है।" सोदाहरण सिद्ध कीजिए।
9. "भूषण ने वीर रसात्मक काव्य लिखकर रीतिकाल में उल्टी गंगा बहाई है।" इस कथन का विवेचन कीजिए।

➡ लघु उत्तरीय प्रश्न

1. शिवाजी के युद्ध-अभियान का वर्णन अपने शब्दों में लिखिए।
2. छत्रसाल की बरछी की क्या विशेषताएँ हैं? शिवाजी की तलवार से उसकी तुलना कीजिए।
3. कविवर भूषण अपनी किन विशेषताओं के आधार पर अपने युग के कवियों से पूर्णतः पृथक् हो जाते हैं?
4. कवि भूषण का जीवन-परिचय देते हुए उनकी कृतियों तथा साहित्यिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
5. रीतिकालीन कवियों में भूषण के विशिष्ट स्थान की समीक्षा कीजिए।
6. वीर रस का स्थायी भाव क्या है? संकलित पदों में इसकी अभिव्यक्ति किस प्रकार हुई है? स्पष्ट कीजिए।

➡ काव्य-सौन्दर्यात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—

   (क) भूषण भनत सुरसरिता को हंस हेरैं,
बिधि हेरैं हंस को चकोर रजनीस कों।

   (ख) पच्छी पर छीने ऐसे परे पर छीने वीर,
तेरी बरछी ने बर छीने हैं, खलन के।

2. पठित पाठ के आधार पर वीर रस के अनुभाव, विभाव और संचारी भावों के कुछ दृष्टान्त दीजिए।
3. निम्नांकित पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है और क्यों?

   (1) तारा सो तरनि धूरिधारा में लगत जिमि,
थारा पर पारा पारावार यों हलत है।

   (2) प्रतिभट कटक कटीले केते काटि काटि,
कालिका सी किलकि कलेऊ देति काल कों।

●●●